



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोरकू जनजाति में कुपोषण की समस्याओं का अध्ययन (मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के विशेष संदर्भ में)

रिनु गोठी

शोधार्थी, डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अंबेडकर नगर (महू) इंदौर

स्वतंत्रता के बाद से कई सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा आदिवासी समुदायों की आजीविका, शिक्षा और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करके उन्हें विकसित करने के प्रयास किये गए। छह दशकों के विशेष उपायों के बावजूद, आज भी, आदिवासी लोग भारतीय समाज के सबसे कुपोषित भाग बने हुए हैं। कुपोषण का शिकार हुए बच्चों को वे कमजोर, दैवीय प्रकोप, कर्म का विधान समझकर उनका उचित ईलाज नहीं कराते हैं। जिसके कारण ऐसे बच्चे या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं अथवा जीवनभर अनेक शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का सामना करते हैं। लगभग 87 प्रतिशत से अधिक परिवार अपने भोजन में नियमित रूप से फल एवं सब्जियों का प्रयोग नहीं करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्हें पर्याप्त पोषण नहीं मिलता है। लगभग 47 प्रतिशत माताएं नियमित रूप से स्तनपान नहीं करवाती हैं क्योंकि आर्थिक रूप से बेहद पिछड़े होने के कारण माताएँ जल्दी ही अपने मजदूरी कार्य करने लग जाती हैं।

कुंजी शब्द – कुपोषण, आदिवासी, समुदाय, पोषण, बच्चे

विकसित देशों में कुपोषण के कारण होने वाले रोग लगभग नदारद हैं या कम ही देखे जाते हैं। पोषण विशेषज्ञों के अनुसार वृद्धि और विकास के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। लेकिन भारत में हमारे लोग सामान्य रूप से और विशेष रूप से आदिवासी संतुलित आहार नहीं लेते हैं।

“यह तीव्र गरीबी, अज्ञानता और पोषण के खराब ज्ञान के कारण है। कुपोषण के कारण शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक है (प्रति 1000 बच्चे पर 123) और आदिवासियों में यह एक बहुत ही गंभीर समस्या है। यह वास्तव में बहुत चिंता का विषय है कि हमारी 20 से 30 आयु वर्ग की महिलाओं का स्वास्थ्य कुपोषण के कारण बहुत खराब है। मध्य प्रदेश में कई आदिवासी समुदाय साल में 2 से 3 महीने मुश्किल से अनाज खाते हैं। उनमें से ज्यादातर केवल छोटे बाजरा पर ही जीवित रहते हैं। यह सच है कि कई बच्चे और

नर्सिंग माताओं को पीने के लिए दूध की एक बूंद भी नहीं मिलती है। इसी वजह से 1 या 2 बच्चों के जन्म के बाद युवा माताएं बूढ़ी और कमजोर दिखती हैं।¹¹⁴

कुपोषण को सामान्य रूप से लोगों और विशेष रूप से आदिवासियों के लिए एक गंभीर समस्या माना जाना चाहिए। यह देखा गया है कि कई क्षेत्रों में आदिवासी आबादी अच्छे भोजन के अभाव, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं और स्वच्छ पेयजल की कमी के कारण घट रही है। “जनजातियों का विस्तार” शिक्षा विभाग द्वारा किया गया एक अध्ययन है जिसमें खण्डवा जिले में पता चलता है कि 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोगों का प्रतिशत घट रहा है। स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे मेहनत नहीं कर पा रहे हैं। इसके अलावा, यह खराब मानसिक विकास का कारण हो सकता है। आदिवासी लोगों में कुपोषण, एनीमिया, फ्रिनोडर्मा, विटामिन की कमी, रतौंधी जैसी कई बीमारियाँ पोषण की कमी के कारण है। खराब भोजन से स्वास्थ्य खराब होता है जो अंततः सामान्य वृद्धि और विकास को रोकता है। जब तक इन लोगों को अच्छा भोजन उपलब्ध कराने के लिए कुछ ठोस कदम नहीं उठाए जाते, कुपोषण की समस्या और बढ़ती जाएगी। जब से अधिक आबादी अच्छे स्वास्थ्य से वंचित है, तो यह निश्चित रूप से राज्य के कल्याण के लिए एक स्वस्थ संकेत नहीं है। इस स्थिति को सरकार और अन्य संबंधित एजेंसियों को अच्छी तरह से समझना चाहिए और स्थिति में सुधार के लिए विशेष कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। बेशक हमारी राष्ट्रीय सरकार और राज्य सरकार आदिवासियों के लिए दूध पाउडर, गेहूं के दाने और विटामिन की गोलियों के साथ विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भोजन की आवश्यकता को पूरा करने की कोशिश कर रही है, जैसे कि देखभाल, पोषण, ग्रामीण गरीबों का आर्थिक पुनर्वास और हरिजन और आदिवासी कल्याण कार्यक्रम।

स्वतंत्रता के बाद से कई सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा आदिवासी समुदायों की आजीविका, शिक्षा और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करके उन्हें विकसित करने के प्रयास किये गए। छह दशकों के विशेष उपायों के बावजूद, आज भी, आदिवासी लोग भारतीय समाज के सबसे कुपोषित भाग बने हुए हैं।

“नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि भारत के 47 लाख आदिवासी बच्चे पोषण की भीषण कमी से पीड़ित हैं, जो उनके जीवित रहने, विकास, सीखने, स्कूल में प्रदर्शन और वयस्कों के रूप में उत्पादकता को प्रभावित कर रहा है। (न्यूट्रिशन इंडिया इंफो)।¹¹⁵

“50 लाख गंभीर रूप से कुपोषित आदिवासी बच्चों के लगभग 80 प्रतिशत सिर्फ आठ राज्यों कर्नाटक, छत्तीसगढ़, गुजरात, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और ओडिशा में रहते हैं। इन राज्यों में और अन्य राज्यों में भी जनजातीय लोगों को, जो भारतीय संविधान की पांचवीं अनुसूची से आच्छादित हैं, भूमि हस्तांतरण, विस्थापन और अपर्याप्त मुआवजे का सबसे अधिक खामियाजा भुगतना पड़ा है।¹¹⁶

पिछले कुछ वर्षों से मध्यप्रदेश के खंडवा जिले में निवास करने वाली कोरकू जनजाति के बच्चों में कुपोषण की समस्या चर्चाओं में रही है तथा शासन के अनेक प्रयासों के पश्चात भी कोरकू जनजाति के बच्चों में कुपोषण की समस्या वैसी ही बनी हुयी है। शोधकर्ताओं द्वारा किए संबंधित क्षेत्र में उनके प्रकार के शोध किए गए परंतु कोरकू जनजाति में कुपोषण से संबंधित ऐसे शोध का अभाव है जो कि यह स्पष्ट

करता हो कि कोरकू जनजाति में कुपोषण के सामाजिक-आर्थिक कारण क्या है एवं उनके क्या समाधान हो सकते हैं। खंडवा जिले की कोरकू जनजाति में कुपोषण की समस्या जितनी चिकित्सा के क्षेत्र से संबंध रखती है उतनी ही सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र से भी जुड़ी हुई है।

प्रस्तुत अध्ययन में कुपोषित बच्चों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारणों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो कि मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है।

तालिका – 1

परिवार में बच्चों के पोषण का स्तर

पोषण का स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न	400	100.0

उपरोक्त समकों के अध्ययन से पता चलता है कि 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उनके बच्चों के पोषण का स्तर कम है।

आँकड़ों के अध्ययन से निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के परिवारों के बच्चों के पोषण का स्तर आवश्यकता अनुसार नहीं है। शत-प्रतिशत बच्चों के पोषण स्तर में कमी है। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के साथ ही तमाम शासकीय योजनाओं के द्वारा किए जा रहे प्रयासों में कहीं ना कहीं कमी है। यदि ऐसा ना होता तो इस प्रकार की स्थिति नहीं होती है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा गतिमान इन योजनाओं पर प्रत्येक वर्ष करोड़ों रूपयों का खर्च किया जाता है किंतु परिणाम उसकी तुलना में संतोषजनक नहीं है। पंचवर्षीय योजनाओं में इसके लिए विशेष बजट निर्धारित किया जाता है जिससे कि देश इस प्रकार की समस्याओं से मुक्त हो सके। शासकीय तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, कर्मठ एवं निष्ठावान अधिकारी-कर्मचारियों की कमी, आदिवासी समाज की अशिक्षा एवं अज्ञानता इसके प्रमुख कारण है। अतः प्रशासन को इस स्थिति में बदलाव के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए।

तालिका – 2

संतुलित आहार की जानकारी

आहार की जानकारी	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्णतः	26	6.5
आंशिक	108	27.0
नहीं	266	66.5
कुल	400	100.0

आंकड़ों के अध्ययन से पता चलता है कि अधिकतम परिवार के सदस्यों को संतुलित आहार के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं है। इसी का परिणाम है कि घर में कुपोषण का शिकार हुए बच्चों को वे कमजोर, दैवीय प्रकोप, कर्म का विधान समझकर उनका उचित ईलाज नहीं कराते हैं। जिसके कारण ऐसे बच्चे या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं अथवा जीवनभर अनेक शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का सामना करते हैं। चिकित्सीय सलाह एवं उपचार के स्थान पर आदिवासी जादू, टोना अथवा ऐसी ही अन्य तांत्रिक क्रियाओं के मायाजाल में फँसे होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि उनमें शिक्षा एवं जागरूकता का प्रसार किया जाए। इससे यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि शासकीय योजनाएँ एवं कर्मचारी आदर्श रूप में अपने कार्यों का निर्वाहन नहीं कर रहे हैं। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

तालिका – 3

परिवार में फल-सब्जियों के उपयोग की स्थिति

फल-सब्जियों का उपयोग	आवृत्ति	प्रतिशत
नियमित	52	13.0
कभी – कभी	266	66.5
बहुत कम	82	20.5
कुल	400	100.0

आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि लगभग 87 प्रतिशत से अधिक परिवार अपने भोजन में नियमित रूप से फल एवं सब्जियों का प्रयोग नहीं करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्हें पर्याप्त पोषण नहीं मिलता है। फल एवं सब्जियों में सभी प्रकार के विटामिन, प्रोटीन तथा शरीर के लिए आवश्यक अन्य पोषक तत्व होते हैं जो कि मानव को स्वस्थ एवं बलवान बनाये रखते हैं। किंतु आर्थिक रूप से अत्यधिक कमजोर आदिवासी परिवार इनका उपयोग नहीं कर पाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होते जा रहे हैं। यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि पूर्व समय में आदिवासी जंगलों में जाकर कंद, मूल, फल तथा मांस लेकर आते थे जिनका प्रयोग आहार में करने से उन्हें जरूरी सभी आवश्यक पोषक तत्व मिल जाते थे, लेकिन जंगलों के विनाश तथा आदिवासी लोगों का शासन द्वारा जंगलों में प्रवेश को वर्जित कर देने के कारण वे अपना पोषण ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं। यदि आदिवासी क्षेत्रों के समुदायों को उनके प्राकृतिक वातावरण में स्वतंत्र छोड़ दिया जाए तो वे स्वयं ही अपना पोषण कर सकते हैं। दूसरी ओर अशिक्षा के कारण वे अपने खान – पान हेतु उपलब्ध वस्तुओं का भी ठीक प्रकार से उपयोग नहीं कर पाते हैं।

तालिका – 4

आयोडीन नमक के उपयोग की स्थिति

आयोडीन नमक के उपयोग	आवृत्ति	प्रतिशत
नियमित	319	79.8
कभी – कभी	54	13.5
बहुत कम	27	6.8
कुल	400	100.0

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकतम उत्तरदाता परिवार अपने भोजन में आयोडीन नमक का उपयोग करते हैं। आयोडीन की कमी से घेंघा, गर्भपात, शारीरिक विकास में रूकावट, मृत बच्चा पैदा होना, काम करने में थकान, कमजोरी, विकलांगकता, मंद बुद्धि, बोनापन तथा भेंगापन जैसे भयंकर रोग अथवा स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी लोग आयोडीन युक्त नमक का प्रयोग करें। वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो बाजार में मिलने वाले सभी नमकों में आयोडीन होता है क्योंकि आयोडीन युक्त नमक के अलावा अन्य नमक का बिक्री पर शासन द्वारा कठोरता से रोक लगा दी गई है।

तालिका – 4.5

शिशु को आवश्यकतानुसार स्तनपान की स्थिति

स्तनपान	आवृत्ति	प्रतिशत
हमेशा	212	53.0
समय मिलने पर	109	27.3
बहुत कम	79	19.8
कुल	400	100.0

आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में 47 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार की माताएँ ऐसी हैं जो शिशुओं को नियमित रूप से स्तनपान नहीं कराती हैं। यह एक घोर चिंता का विषय है। जन्म के तुरंत बाद से लेकर कम से कम 12 माह तक शिशुओं के लिए माँ का दूध ही सर्वोच्च एवं नितांत आवश्यक आहार है। यदि नियमित स्तनपान ना कराया जाए तो बच्चों में कुपोषण की स्थिति पैदा होने की प्रबल संभावना है। माँ के दूध से ही शिशु को सभी प्रकार के पोषक तत्व प्राप्त होते हैं और इसका कोई अन्य विकल्प नहीं है। इसलिए यह आवश्यक है कि माताएँ अपने शिशुओं को समय-समय पर स्तनपान करायें। आर्थिक रूप से बेहद पिछड़े होने के कारण माताएँ जल्दी ही अपने मजदूरी कार्य करने लग जाती हैं। इसके अलावा माताओं को पोषक तत्वों से भरपूर भोजन ना मिलने के कारण, अधिक शारीरिक मेहनत

के कारण माताओं के स्तनों में पर्याप्त दूध की मात्रा का अभाव भी हो जाता है जिससे कि वे स्तनपान कराने के लिए लालायित नहीं रहती है। अशिक्षा तथा जागरूकता की कमी भी इसमें विशेष प्रभाव डालते हैं अतः यह परम् आवश्यक है कि प्रशासन द्वारा इस प्रकार की समस्याओं के लिए विशेष प्रयास किये जाए।

तालिका – 6

6 माह से अधिक उम्र के बच्चों को अर्द्धठोस आहार की स्थिति

अर्द्धठोस आहार	आवृत्ति	प्रतिशत
हमेशा	54	13.5
कभी – कभी	318	79.5
नहीं	28	7.0
कुल	400	100.0

आंकड़ों के अध्ययन के परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र में निवासरत् परिवार 6 माह से अधिक उम्र के बच्चों को अर्द्धठोस आहार का सेवन नियमित रूप से नहीं कराते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि उन्हें उचित पोषण एवं माँ के दूध के साथ बाहरी उचित खान – पान की आदत नहीं हो पाती है। गरीबी एवं अशिक्षा के कारण पहले से ही आदिवासी समुदाय की महिलाएँ बच्चों को ठीक प्रकार से स्तनपान नहीं करा पाती है तो दूसरी ओर बच्चों को उचित मात्रा में अर्द्धठोस आहार ना मिलने से उनमें कुपोषण होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसके लिए उचित जागरूकता कार्यक्रम एवं माताओं को आवश्यक परामर्शन देना बहुत आवश्यक है। 6 माह के बाद बच्चों को अर्द्धठोस आहार देने से उनके शरीर को उचित एवं आदर्श पोषण मिल सकता है।

तालिका – 7

बच्चों को दिन में आहार की आवृत्ति

दिन में आहार	आवृत्ति	प्रतिशत
2 बार	265	66.2
3 बार	135	33.8
कुल	400	100.0

आंकड़ों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चों के आहार को लेकर शोध क्षेत्र के उत्तरदाता परिवार गंभीर नहीं है। मात्र 33 प्रतिशत के लगभग उत्तरदाता ऐसे हैं जो 3 बार तक अपने बच्चों को एक दिन में आहार प्रदान करते हैं। शिशु अपने स्वभाव एवं शारीरिक बनावट अथवा विकास के इस अंग में एक बार में अधिक आहार ग्रहण नहीं कर सकता है इसलिए आवश्यक है कि कुछ घंटों के

बाद ही उसे लगातार आहार प्रदान किया जाए। यदि इस प्रकार से आहार नहीं दिया जाए जो उनमें पोषण की कमी हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि उनके पालन – पोषण पर अधिक ध्यान दिया जावे। आर्थिक समस्याओं, मजदूरी कार्य, अशिक्षा तथा जागरूकता में कमी होने के कारण माता – पिता इस ओर उचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसलिए शासन के लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण एवं परामर्शन के द्वारा उन्हें इस ओर आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित करें ताकि बच्चे कुपोषण की स्थिति से बच सकें।

तालिका – 8

शिशु के विकास संबंधी जाँच स्वास्थ्यकर्मी/कार्यकर्ता से करवाने संबंधी अभिमत

शिशु के विकास संबंधी जाँच	आवृत्ति	प्रतिशत
हमेशा	26	6.5
कभी – कभी	109	27.3
नहीं	265	66.3
कुल	400	100.0

उपरोक्त तालिका अनुसार 66.3 प्रतिशत परिवार के सदस्य स्वास्थ्यकर्मी अथवा कार्यकर्ता से अपने बच्चे की जाँच नहीं कराते हैं कि उनका शारीरिक विकास आयु अनुरूप हो रहा है अथवा नहीं। 27.3 प्रतिशत कभी-कभी जाँच कराते हैं शेष 6.5 प्रतिशत परिवार अपने बच्चों की नियमित जाँच कराते हैं कि उनका विकास आयु अनुरूप हो रहा है अथवा नहीं। आंकड़ों का अध्ययन करने से पता चलता है कि शोध क्षेत्र में निवास करने वाले परिवार में बच्चों के विकास अथवा स्वास्थ्य को लेकर उचित जागरूकता अथवा चिंता नहीं है। मात्र 6 प्रतिशत परिवार ही ऐसे हैं जो अपने बच्चों का आयु अनुरूप विकास हो रहा है अथवा नहीं इसकी नियमित जाँच कराते हैं। किसी बच्चे को उचित पोषण आहार मिल रहा है अथवा नहीं इसको जानने का सबसे सरल उपाय यह है कि उसकी आयु अनुरूप उसका शारीरिक विकास हो रहा है अथवा नहीं, किंतु अशिक्षा एवं जागरूकता में कमी के कारण आदिवासी समुदाय के परिवार इस ओर विशेष ध्यान नहीं देते हैं। यदि उन्हें इस समस्या का ज्ञान हो भी जाए तो वे बच्चों को चिकित्सक के पास ले जाने के स्थान पर जादू – टोना, झाड़ – फूंक का सहारा लेते हैं। और इसका परिणाम यह होता है कि समय के साथ बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है। उन्हें लगता है कि दैवीय ईच्छा, प्रकोप अथवा कर्मविधान अनुसार बच्चे का शारीरिक विकास नहीं हो रहा है।

तालिका – 4.12

बच्चे में नियमित बीमारी संबंधी अभिमत

अभिमत	आवृत्ति	प्रतिशत
हमेशा	27	6.7
कभी – कभी	373	93.3
कुल	400	100.0

आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शोध क्षेत्र के 100 प्रतिशत परिवारों के बच्चे हमेशा किसी ना किसी बीमारी से ग्रसित रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि वे शारीरिक रूप से कमजोर हैं जिसके कारण उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है अथवा नहीं है। इस स्तर के बच्चों को तुरंत एवं आवश्यक रूप से चिकित्सिक उपचार एवं विशेष देखभाल की आवश्यकता है। जिससे कि वे गंभीर कुपोषण या अन्य जानलेवा बीमारियों के खतरे से बच सकें। कमजोर बच्चे मौसम परिवर्तन में बहुत जल्दी बीमार हो जाते हैं। यही कारण है कि उनका जरूरी शारीरिक एवं मानसिक विकास नहीं हो पाता है। ऐसा होने की भी प्रबल संभावना है कि इस प्रकार के बच्चे जीवनभर शारीरिक मानसिक बीमारियों से जूझते रहते हैं।

तालिका – 4.13

चिकित्सकों द्वारा गर्भवती महिलाओं की नियमित जाँच

नियमित जाँच	आवृत्ति	प्रतिशत
हमेशा	26	6.5
कभी – कभी	212	53.0
नहीं	162	40.5
कुल	400	100.0

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र में निवास करने वाले परिवारों की गर्भवती माताओं की चिकित्सकों द्वारा गंभीरता एवं नियमित रूप से जाँच नहीं की जाती है। इसका कारण यह है कि 40 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाता ऐसे हैं जो पूर्ण रूप से इस तथ्य को अस्वीकार कर रहे हैं कि उनके परिवार की किसी भी गर्भवती महिला की किसी भी चिकित्सक के द्वारा कोई नियमित जाँच नहीं की गई है। मात्र 6 प्रतिशत के लगभग उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके परिवार की महिलाओं की नियमित जाँच हुई है। अतः प्रशासन को अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन की उचित समीक्षा एवं जाँच करने की आवश्यकता है। गरीबी के कारण दबे – कुचले तथा अशिक्षित जनजातीय परिवार अपने अधिकारों के बारे में खुलकर नहीं बोल पाते हैं।

तालिका – 4.17

पहला पीला गाढा दूध बच्चे को पिलाने संबंधी अभिमत

अभिमत	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	267	66.8
नहीं	133	33.2
कुल	400	100.0

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 33 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाता परिवारों ने प्रसव के बाद शिशु को पहला गाढा-पिला दूध नहीं पिलाया है। यह एक अत्यंत निराशाजनक, चिंताजनक एवं गंभीर स्थिति है। माता का पहला गाढा-पिला दूध शिशु के समग्र विकास एवं जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। यह दूध शिशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, उसे स्तनपान सीखाने के लिए आवश्यक है, उसकी कुल आयु को बढ़ाता है तथा अनेक गंभीर बीमारियों से उसकी रक्षा करता है। इसलिए यह सुनिश्चित करना किसी भी परिवार, समुदाय, समाज अथवा शासन के लिए आवश्यक है कि माताएँ अपना पहला पिला-गाढा दूध अपने शिशु को पिलाएँ। कई लोग धार्मिक मान्यताओं एवं उस दूध के गाढे एवं पीलेपन के कारण उसे अज्ञानतावश शिशु को नहीं पिलाते हैं जिसके अभाव में शिशु कमजोर ही रह जाता है और वह निमानिया एवं डायरीया जैसी गंभीर बीमारी का शिकार हो सकता है। ऐसे बच्चों का भविष्य में कुपोषण का शिकार हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आंगनवाडी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता, स्वास्थ्य केन्द्रों के कर्मचारी तथा शासकीय चिकित्सालयों में उपस्थित स्तनपान सलाहकारों को माताओं तथा उनके परिवार वालों को इस तथ्य को भलिभौति प्रकार से समझाना चाहिए कि यह दूध शिशु के लिए अमृत का कार्य करता है।

शोध क्षेत्र के परिवारों के बच्चों के पोषण का स्तर आवश्यकता अनुसार नहीं है अतः शत – प्रतिशत बच्चों के पोषण स्तर में कमी है। अधिकतम परिवार के सदस्यों को संतुलित आहार के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं है। इसी का परिणाम है कि घर में कुपोषण का शिकार हुए बच्चों को वे कमजोर, दैवीय प्रकोप, कर्म का विधान समझकर उनका उचित ईलाज नहीं कराते हैं। जिसके कारण ऐसे बच्चे या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं अथवा जीवनभर अनेक शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का सामना करते हैं। लगभग 87 प्रतिशत से अधिक परिवार अपने भोजन में नियमित रूप से फल एवं सब्जियों का प्रयोग नहीं करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्हें पर्याप्त पोषण नहीं मिलता है। लगभग 47 प्रतिशत माताएँ नियमित रूप से स्तनपान नहीं करवाती हैं क्योंकि आर्थिक रूप से बेहद पिछड़े होने के कारण माताएँ जल्दी ही अपने मजदूरी कार्य करने लग जाती हैं। इसके अलावा माताओं को पोषक तत्वों से भरपूर भोजन ना मिलने के कारण, अधिक शारीरिक मेहनत के कारण माताओं के स्तनों में पर्याप्त दूध की मात्रा का अभाव भी हो जाता है जिससे कि वे स्तनपान कराने के लिए लालायित नहीं रहती हैं। गरीबी एवं अशिक्षा के कारण पहले से

ही आदिवासी समुदाय की महिलाएँ बच्चों को ठीक प्रकार से स्तनपान नहीं करा पाती है तो दूसरी ओर बच्चों को उचित मात्रा में अर्द्धठोस आहार ना मिलने से उनमें कुपोषण होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

संदर्भ

- 1 धर प्रांजल (2013) रोकना ही होगा खाद्य अपव्यय को, योजना वर्ष – 57, अंक – 12 पृ. क्र. 31
- 2 नागे अनिता (2018) पोषण एवं स्वास्थ्य: एक अध्ययन, रिसर्च लिंक – 24 पृ. क्र. 03
- 3 पंत नवीन (2017) गरीबी उन्मूलन और खाद्य सुरक्षा योजना, पृ. क्र. 23

